INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

भारत –भूटान आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(India-Bhutan Economic and Trade Relations: An Analytical Study)

Dr. SUBHASH CHNDRA
Assistant Professor (Guest Faculty) in Political Science,
Government College, Nechhwa (Sikar) (Rajasthan, India)
E-mail: chndrasubhash3@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/02.2023-19377289/IRJHIS2302005

सारांश :

भूटान, भारत का निकटतम पड़ोसीं और घनिष्ठ मित्र राष्ट्र हैं। दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रहे हैं। भारत–भूटान मित्रतापूर्ण सम्बन्धों का प्रमुख आधार पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिकऔर व्यापारिक सम्बन्ध हैं। भूटान एक भू–आबद्ध राष्ट्र होने के साथ–साथ तीन तरफ से भारत की भूमि से घिरा हुआ हैं। इस भू–बन्धिता के कारण भूटान का अधिकतर व्यापार भारत के साथ ही होता है तथा अन्य देशों के साथ भी व्यापार भारत क्षेत्र से होकर ही होता हैं। इसी कारण भारत, भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश हैं। भारत–भूटान आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों कों आधार लाभ–हानि नहीं हैं अपितु पारस्परिक सहयोंग हैं। इसी कारण भारत ने भूटान कों आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्रों में अनेक रियायते प्रदान कर रखी हैं तथा भूटान की विकास परियोजनाओं में आर्थिकऔर तकनीकि सहायता प्रदान करता हैं। प्रस्तुत लघु भाोध पत्र में भारत–भूटान आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों का विश्लेषण वर्तमान संदर्भ में करते हुये निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया हैं।

मुख्य शब्द : *भारत और भूटान, व्यापारिक सम्बन्ध, व्यापार संतुलन, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पन–बिजली*

प्रस्तावना :

दक्षिण एशिया में भूटान ही एकमात्र ऐसा देश हैं जिसके साथ के भारत के घनिष्ठ और मित्रतापूर्ण सम्बन्ध हैं। इन मित्रता पूर्ण सम्बन्धों को गति देने का कार्य पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध करते हैं। इन सम्बन्धों को वर्ष 1949 में दोनों देशों के मध्य हस्ताक्षरित ''शांति और मित्रता'' की संधि और अधिक मजबूती प्रदान करती हैं। भाांति और मित्रता की इस संधि में दोनों देशों के मध्य मुफ्त–व्यापार के बीज भी विद्यमान थे। इस संधि का अनुच्छेद पांच यह निर्दिष्ट करता है कि भारत और भूटान के मध्य शुल्क–मुफ्त व्यापार और वाणिज्य होगा तथा भारत सरकार भूटान को अपनी भूमि एवं जल दोनों से पारगमन की सुविधा प्रदान करेगी। इसके बाद वर्ष 1972 में दोनों देशों के मध्य व्यापार और वाणिज्य से सम्बन्धित एक

समझौते पर हस्ताक्षर हुये। यह समझौता दोनों देशों के मध्य मुफ्त–व्यापार की व्यवस्था करता हैं तथा भूटान को किसी तीसरे देश में अपने उत्पादों के निर्यात के लिए भारत क्षेत्र से होकर निःशुल्क पारगमन की सुविधा प्रदान करता हैं। इस समझौते को समय–समय पर नवीनीकृत किया जाता रहा हैं। इसके अलावा दक्षिण एशियाई मुफ्त व्यापार क्षेत्र समझौता (2006) दोनों देशों को व्यापार के नए अवसर एवं सुविधाए प्रदान करता हैं।

भूटान आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की दृष्टि से एक पिछड़ा राष्ट्र हैं जिसके कारण इसके निर्यात में कृषि एवं वनो से उत्पादित वस्तुऐं अधिक होती है और आयात में विनिर्माण क्षेत्र से सम्बन्धित उत्पाद अधिक होते हैं। भूटान ने भारत के सहयोग से पन–बिजली के उत्पादन में काफी प्रगति की हैं। भूटान अपने देश में उत्पादित होने वाली विद्युत–उर्जा का 75 प्रतिशत हिस्सा निर्यात करता है। भारत, भूटान की विद्युत उर्जा का सबसे बड़ा खरीददार देश हैं।

भूटान के आयात–निर्यात में भारत की हिस्सेदारी सबसे अधिक हैं। भूटान के कुल व्यापार में भारत की हिस्सेदारी लगभग 82 प्रतिशत हैं। भारत के अलावा बांग्लादेश और सिंगापुर भूटान के प्रमुख व्यापारिक भागीदार देश हैं।

भारत–भूटान के मध्य वर्ष 2014–15 में कुल 484 मिलियन अमेरिकन डॉलर का व्यापार हुआ, जो 2021–22 में बढकर 1422 मिलियन अमेरिकन डॉलर हो गया। पिछले कुछ वर्षों (2017 से 2021) में भारत–भूटान के मध्य हुये द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा;वॉल्यूमद्ध निम्नलिखित तालिका से दृष्टव्य हैं :–

तालिका 1 : भारत–भूटान के बीच व्यापार (विद्युत–उर्जा के अलावा)

विवरण	2017	2018	2019	2020	2021
भूटान को निर्यात (यूएसडी मिलियन)	546	657	739	694	877
भूटान से आयात (यूएसडी मिलियन)	378	371	405	389	545
व्यापार संतुलन(यूएसडी मिलियन)	168	286	334	305	332
कुल व्यापार(यूएसडी मिलियन)	924	1028	1144	1083	1422

स्त्रोंतः http://www.indembthimphu.gov.in

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि भूटान का भारत के साथ व्यापार संतुलन प्रतिकुल हैं। भूटान के व्यापार घाटे को कम करने हेतु दोनों देशों ने अनेक कदम उठाये हैं। भारत और भूटान के मध्य व्यापार भारतीय रूपये में किया जाता हैं जो लगभग भूटानी मुद्रा न्गुलट्रम के बराबर हैं।

व्यापार संरचना :

भारत से भूटान को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में पेट्रोलियम तेल, एल.पी.जी.गैस, कोयला, मोटर वाहन, लौह अयस्क, लकड़ी का कोयला और लौह इस्पात हैं। भारत द्वारा भूटान से आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं और उत्पादों में विद्युत उर्जा, सीमेंट फेरो–सिलिकॉन, कार्बन उत्पाद और एथिलीन के पॉलिमर की प्लेट शीट शामिल हैं। यह एक दिलचस्प बात हैं कि भारत से निर्यात की जाने वाली शीर्ष दस वस्तुओं और उत्पादों की भागीदारी भूटान को किये जाने वाले कुल निर्यात (2019–2020) में 41 प्रतिशत हैं। इसी तरह भूटान से आयात की जाने वाली शीर्ष दस वस्तुओं और उत्पादों की भागीदारी भूटान से होने वाले सम्पूर्ण आयात (2019–2020) में 93 प्रतिशत हैं। भूटान से आयात होने वाले दो उत्पादों– विद्युत उर्जा और फेरो–सिलिकॉन की

कुल आयात में 71 प्रतिशत हिस्सेदारी हैं।

तालिका 2 : भारत से भूटान को निर्यात किए जाने वाले शीर्ष 10 उत्पाद (2021–22)

क्र.स.	उत्पाद का नाम	कुल निर्यात में हिस्सेदारी (प्रतिशत में)
1.	पेट्रोल, डीजल, हाई स्पीड डीजल/गैस तेल	15.5
2.	भारी मोटर वाहन (20 टन से अधिक वजन के वाहन)	4.4
3.	लौह अयस्क के प्रत्यक्ष न्यूनीकरण से प्राप्त लौह उत्पाद	4.6
4.	लाइट ऑयल्स	3.7
5.	लकड़ी का कोयला	3.3
6.	हल्के माल वाहक वाहन (5 टन से कम वजन के वाहन)	2.2
7.	कोलतार (डामर)	2.3
8.	कोयला और लिग्नाइट/पीट के कोक एवं अर्द्ध कोक	1.8
9.	व्यक्तिगत यात्री वाहन (1500 सीसी इंजन क्षमता से कम क्षमता के वाहन)	1.7
10.	माल परिवहन के लिये मोटर वाहन (5 टन से अधिक परन्तु 20 टन से कम वजन वाले वाहन)	1.5
कुलयोग		40.8

तालिका 3 : भारत द्वारा भूटान से आयात किये जाने वाले शीर्ष 10 उत्पाद (2021–22)

क्र.स.	उत्पाद का विवरण	कुल आयात में हिस्सेदारी (प्रतिशत में)
1.	विद्युत उर्जा	36.9
2.	फेरो सिलिकॉन	34.8
3.	डोलोमाइट रिमिंग मिक्स	7.4
4.	लोहे/गैर मिश्र धातु इस्पात के अर्द्ध –तैयार उत्पाद	6.2
5.	सिलिकॉन कार्बाइड	3.1
6.	एथिलीन के पॉलिमर की प्लेट शीट	1.4
7.	सीमेंट	1.4
8.	फ्लेवर्ड वॉटर	0.8
9.	रिफाइंड ताड़ का तेल और इसके अंशो से बने पदार्थ	0.6

10.	सेब, अंगुर आदि फलों का रस	0.6
	कुलयोग	93.1

स्त्रोंत : विदेश व्यापार महानिदेशालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

भूटान में भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश :

ऐतिहासिक रूप से भूटान ने अपनी संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण को ध्यान में रखते हुये प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर रूढ़िवादी और प्रतिबंधात्मक नीति को अपनाया। इस नीति के कारण भूटान में नाममात्र का विदेशी निवेश हो सका। भूटान ने 2000 के दशक के प्रारम्भ में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक स्पष्ट नीति अपनाई। अपनी अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने हेतु प्रथम बार एफ.डी.आई. के लिये वर्ष 2002 में एक स्पष्ट नीति बनाई तथा इस नीति के ठीक ढ़ंग से क्रियान्वयन के लिए वर्ष 2005 में एक और नीति बनाई गई। वैश्विक निवेश माहोल में परिवर्तन तथा अर्थव्यवस्था की बदलती जरूरतों के हिसाब से वर्ष 2010 में भूटान ने अपनी एफ.डी.आई. नीति में संशोधन किया। इस संशोधन में नकारात्मक सूची दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। नकारात्मक सूची में शामिल क्षेत्रों के अलावा अन्य सभी क्षेत्र विदेशी निवेश के लिये खोल दिये गये। भूटान ने विदेशी निवेशको के लिये अनुकूल वातावरण बनाने के लिए अपनी प्रत्यक्ष विदेश निवेश नीति में एक बार पुनः वर्ष 2014 में संशोधन किया। इस संशोधित नीति में यह प्रावधान किया गया कि, विदेशी संस्थागत निवेशक न्यूनतम दस प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ भूटान में निवेश कर सकते हैं तथा कुछ क्षेत्रों में 100 प्रतिशत तक स्वामित्व की अनुमति दी गई हैं। प्रमुख क्षेत्रों में न्यूनतम निवेश स्तर में भी कमी की गई हैं। प्रत्यावर्तन से सम्बन्धित कई विदशी मुद्रा प्रतिबन्ध लाभांश और परिचालन जरूरतों को भी उदार बनाया गया हैं।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिये किये गये इन प्रयासों के परिणामस्वरूप भूटान एक महत्वपूर्ण विदेशी निवेश के गंतव्य के रूप में उभर कर सामने आया हैं। विश्व के अनेक देश भूटान में एफ.डी. आई. के लिये आगे आये और विभिन्न क्षेत्रों में निवेश किया हैं। भारत, भूटान में सबसे बड़ा निवेशक देश हैं। वर्ष 2019 में भूटान के सम्पूर्ण एफडीआई में भारत की हिस्सेदारी 51 प्रतिशत थी। भारत के अलावा सिंगापुर और थाईलैण्ड प्रमुख निवेशक देश है। इन दोनों देशों की वर्ष 2019 में भूटान के सम्पूर्ण एफडीआई में हिस्सेदारी क्रमशः 15 प्रतिशत और 13 प्रतिशत थी।

भारत ने जुलाई 2008 से मार्च 2020 तक की अवधि के दौरान भूटान में कुल 50.12 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया हैं। हाल ही के वर्षों में अनेक भारतीय कम्पनियों ने भूटान में उपलब्ध सस्ती बिजली के कारण पन बिजली, गैस और पानी के क्षेत्र की अनेक परियोजनाओं में निवेश किया हैं। भूटान के पन–बिजली क्षेत्र में भारत के सम्पूर्ण निवेश का 41 प्रतिशत हिस्सा लगा हैं। भूटान की दगाछू जल विद्युत परियोजना, भारत की टाटा पॉवर कंपनी लिमिटेड और दगाछू हाइड्रो पॉवर का एक संयुक्त उद्यम हैं। टाटा पॉवर ने इस परियोजना में लगभग 6 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया हैं। यह परियोजना भूटान के दगाना जिले में स्थित है। वर्ष 2014 में भारतीय फर्म सुनयना कमोडिटिज प्रा. लि. ने 11 मिलियन अमेरिकी डॉलर का भारी निवेश किया था। भारतीय फर्म ने भूटानी फर्म, क्वालिटी गैस प्रा.लि. के साथ मिलकर एक संयुक्त उद्यम की शुरूआत की हैं। दोनों फर्मों के मध्य तरल नाइट्रोजन और ऑक्सीजन गैस के उत्पादन के लिये समझौता हुआ

था।

भूटान में भारतीय निवेश का दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र थोक एवं खुदरा व्यापार तथा रेस्तरां और होटल है इनमें भारतीय निवेश की 27 प्रतिशत हिस्सेदारी है। इसके बाद विनिर्माण क्षेत्र, कृषि, वानिकी, शिकार और मछली पकड़ने का स्थान आता हैं। इन क्षेत्रों में भारत की हिस्सेदारी क्रमशः 14 प्रतिशत और 7 प्रतिशत हैं।

तालिका 4 : भूटान में भारत का क्षेत्रवार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (जुलाई 2009–मार्च 2020)

निवेश का क्षेत्र	कुल एफ.डी.आई. (मिलियन अमेरिकी डॉलर में)	कुल एफ.डी.आई में हिस्सेदारी (प्रतिशत में)
पन–बिजली, गैस और पानी	21.24	41
थोक एवं खुदरा व्यापार तथा रेस्तरां और होटल	13.19	27
विनिर्माण	6.8	14
कृषि, वानिकी, शिकार और मछली व्यवसाय	3.42	7
विविध	2.17	4
कृषि और खनन	2.02	4
निर्माण	1.22	2
सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	0.05	0
वित्तीय, बीमा और व्यावसायिक सेवाएं	0.01	0
भूटान में भारत का सम्पूर्ण एफ.डी.आई.	50.12	100

स्त्रोंत : आर.बी.आई. ओवरसीज इन्वेस्ट्मेन्ट् डेटा

पंचवर्षीय योजनाओं में भारत का सहयोग :

भारत, भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार ही नहीं हैं, अपितु विकास भागीदार भी हैं। भूटान ने अपने योजनाबद्ध विकास के लिये 1960 के दशक में पंचवर्षीय योजनाएं प्रारम्भ की थी। भारत ने भूटान की पंचवर्षीय योजनाओं में यथासंभव आर्थिक सहयोग दिया हैं। भूटान की प्रथम पंचवर्षीय योजना वर्ष 1961 में शुरू हुई थी। वर्ष 1961 से लेकर वर्तमान तक भूटान की 11 पंचवर्षीय योजनाएं पूर्ण हो चुकी है और 12 वीं पंचवर्षीय योजना चालू हैं।

भारत ने प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर वर्तमान में जारी 12वीं पंचवर्षीय योजना तक भूटान को यथासंभव आर्थिक सहयोग दिया हैं। भूटान की पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजना में खर्च हुई सम्पूर्ण धनराशि भारत सरकार ने वहन की थी।

तालिका 5 : भूटान की पंचवर्षीय योजनाओं में भारत की आर्थिक सहायता

पंचवर्षीय योजनाएं	योजना के लिये आंवटित सम्पूर्ण धनराशि (रूपयें करोड़ में)	भारत का योगदान (रूपये करोड़ में)	भारत के योगदान का प्रतिशत
पहली योजना (1961–66)	10.72	10.72	100
दूसरी योजना 1966–71	20.22	20.22	100
तीसरी योजना (1971–76)	47.52	42.66	90
चौथी योजना (1976–81)	110.62	85.30	77
पांचवी योजना (1981–87)	444.05	134.00	30.2
छठी योजना (1987–92)	950.00	400.00	42.1
सातवीं योजना (1992–97)	2,350.00	750.00	31.9
आठवी योजना (1997–2002)	4,000.00	1,050.00	26
9वीं योजना (2002–08)	8,900.00	2,610.14	29.33
10वीं योजना (2008–13)	14,900.00	3,400.00	23
11वीं योजना (2013–18)	21,300.00	4,500.00	21
12वीं योजना (2018–23)	31,000.00	4,500.00	14.51

स्त्रोंत :https:// indembthimphu.gov.in

पनबिजली परियोजनाओं में सहयोग :

भारत–भूटान के मध्य जल–विद्युत परियोजनाएं सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र हैं। ये परियोजनाएं भारत के लिये सस्ती और स्वच्छ बिजली का एक विश्वसनीय स्त्रोंत हैं और भूटान के लिये जीडीपी को मजबूत करने का

एक प्रमुख साधन हैं। भूटान की जीडीपी में 25 प्रतिशत हिस्सेदारी, पनबिजली के निर्यात से प्राप्त होने वाली आय की होती हैं। भारत, भूटान की पनबिजली का सबसे बड़ा आयातक देश हैं। भूटान प्रतिवर्ष लगभग 5,000 मिलियन यूनिट बिजली भारत को निर्यात करता हैं।

भारत और भूटान के मध्य जल विद्युत के क्षेत्र में सहयोग, वर्ष 1961 से प्रारम्भ होता हैं, जब दोनों देशों के मध्य जलंधा नदी से विद्युत उत्पादित करने का समझौंता होता हैं। वर्ष 1974 में, भारत–भूटान के मध्य चूखा जल विद्युत परियोजना के निर्माण के समझौंते पर हस्ताक्षर हुये। यह परियोजना दोनों देशों की संयुक्त परियोजना थी, जो सम्पूर्ण रूप से भारत सरकार द्वारा वित पोषित थी (60 प्रतिशत अनुदान और 40 प्रतिशत ऋण)। यह परियोजना वर्ष 1998 में बनकर तैयार हुई तथा इसकी कुल विद्युत उत्पादन क्षमता 336 मेगावाट थी।

भारत और भूटान के मध्य वर्ष 2006 में, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण, विकास और प्रोत्साहन एवं ट्रांसमिशन प्रणाली और बिजली व्यापार के सम्बन्ध में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुये थे। यह समझौता भारत और भूटान के मध्य पनबिजली के क्षेत्र में भविष्य के द्विपक्षीय सहयोग के लिये रूपरेखा तैयार करता हैं। इस समझौते के अनुसार भारत वर्ष 2020 तक भूटान को न्यूनतम 10,000 मेगावाट जल विद्युत विकसित करने में सहायता देगा।

वर्ष 2006 के समझौते के बाद, भारत ने भूटान को अनेक जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण और विकास में आर्थिक और तकनीकि सहयोग दिया हैं। जिन विद्युत परियोजनाओं के विकास में भारत ने सहयोग दिया हैं, उन परियोजनाओं में से कुछ परियोजनाएं चालू हैं तथा कुछ परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। भूटान में भारत के आर्थिक सहयोग से निर्मित और निर्माणाधीन प्रमुख परियोजनाऐं निम्नलिखित हैंः–

1.चूखा जल विद्युत परियोजना,
2.कुरिचू जल विद्युत परियोजना,
3.ताला जल विद्युत परियोजना,
4.पुनात्सांग्छु प्रोजेक्ट–1,
5.पुनात्सांग्छु प्रोजेक्ट–2,
6.मांग्देछु जल विद्युत परियोजना,
7.बुनखा हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट,
8.दगाछु पनबिजली परियोजना,
9.वांगचू हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट,
10.चम्कार्चु पनबिजली परियोजना,
11.खोलोंघचु हाइड्रोपॉवर प्लांट

निष्कर्ष :

भारत–भूटान आर्थिक सम्बन्धों का विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता हैं कि भारत, भूटान का सबसे बड़ा निर्यात बाजार और आयात का सबसे बड़ा स्त्रोंत हैं। भूटान की एफडीआई (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश) में भारत की सबसे बड़ी हिस्सेदारी हैं। भारत अपने भू–क्षेत्र के माध्यम से भूटान को पारगमन की सुविधाएं देकर

भू–बन्धिता से पैदा हुई बाधाओं से भूटान को मुक्ति दिलाता हैं। भारत, भूटान की पंचवर्षिय योजनाओं और प्रमुख विकास परियोजनाओं में वित्तिय और तकनीकि सहायता देने वाला सबसे बड़ा देश हैं। जल–विद्युत परियोजनाएं भारत–भूटान के मध्य सहयोग का एक महत्वपूर्ण कारक हैं। ये परियोजनाए जहां भारत के लिये सस्ती और प्रदुषण–रहित बिजली का स्त्रोंत हैं वहीं भूटान की अर्थव्यवस्था को गति देने का एक प्रमुख साधन हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. चन्द्र,एस. : भारत–भूटान आर्थिक सम्बन्ध, दिव्यम् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021,पृ.सं. 28
2. एफ.डी.आई. ऐन्यूल रिपोर्ट 2020, डिपार्टमेन्ट ऑफ इण्डस्ट्री, मिनिस्ट्री ऑफ इकॉनोमिक अफेयरस्, गवर्नमेंट ऑफ भूटान, थिम्फू.
3. देबनाथ, सैलेन : इण्डों – भूटान रिलेशन्स् इन मॉर्डन टाइम्स, आयु पब्लिकेशन्स्, न्यू देहली, 2017. पृ.सं. 48–49
4. गुप्ता अंशुमान : डब्ल्यू.टी.ओ. एण्ड साउथ एशिया, शिप्रा पब्लिकेशंस,न्यू देहली, 2012.
5. ट्वेल्थ फाइव इयर प्लान (2018–2023), ग्रोस नेशनल हैप्पीनेस कमीशन, रॉयल गवर्नमेंट ऑफ भूटान, थिम्फू, 2019
6. द हिन्दू, 29 दिसम्बर, 2018, नई दिल्ली
7. संगे चोपेल, एक्सपोर्ट प्राइस ऑफ इलेक्ट्रिसिटी इन भूटान : द केस ऑफ मांग्देछू हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट, जर्नल ऑफ भूटान स्टडिज्, वॉल्यूम 32, समर, 2015, पृ.सं. 8–9
8. आर. पद्म, इण्डो–भूटानीज् रिलेशंस : फ्रॉम स्पेशल रिलेशंसिप टू स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हयूमैनिटीज् एण्ड सोशल साइंसेज्, वॉल्यूम 7, नम्बर 2, 2017, हैदराबाद, पृ.सं. 162–163
9. अमीत रंजन, इंडिया– भूटान हाइड्रोपॉवर प्रोजेक्ट्सः को–ऑपरेशन एण्ड कंसर्न, वर्किंग पेपर 309, इंस्टिट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्ट्डिज्, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर, सिंगापुर, पृ.सं. 4–5
10. पॉवर डेटा बुक 2019, भूटान पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, थिम्फू, भूटान, 2020
11. लक्ष्मी प्रेमकुमार, ए स्टडी ऑफ द इंडिया – भूटान एनर्जी को–ऑपरेशन एग्रीमेन्ट एण्ड द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ हाइड्रोपॉवर प्रोजेक्ट्स इन भूटान, वसुधा फाउंडेशन, न्यू देहली, 2018, पृ.सं. 17–20